classmate Date Page

Page: 1 sto2)

DATE: 19/09/2020

CLASS : BOA. (H) PART-2ND

SUBJECT: POLITICAL SCIENCE

PAPER : III (INDIANGOVERNMENT & POLITICS)

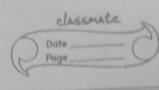
CH: 09 (SUPREME COURT: JURISDICTION) LECTURE NO.-15 (FIFTEEN) By,
OM KUMAR SINGH
ASSISTANT PROFESSOR
DEPTT. OF POL.SC.

D.B.COLLEGE, JAYNAGAR
LNMU, DARBHANGA

अविद्य न्यायाम्य की आवश्यकता श्रीर महत्व : आरतीय सर्वीरन्य न्यायाम्य आवश्यकता श्रीर महत्व की निम्नामान्त्र क्योंग्

(1) संविधान का रक्षक -

उत्ते हेत स्वान्य मामाण्य का त्यवर्थापन कें विश्व हें है। में कि स्विधान निर्माताकों ने संविधान की स्वीर्यता के मिल्लात को मान्यता प्रहान की स्वार्य ने यायातम् के द्वा ही कियाणाता कारतीय स्वार्य ने यायातम् के द्वा ही कियाणाता है। आरतीय स्वार्य ने यायातम् के द्वा ही कियाणाता है। आरतीय स्वार्य ने यायातम् स्विधान के स्वार्य के विश्व स्वार्य के द्वारा विश्वार के माम होन्य के विश्व स्वार्य के द्वारा विश्वार के कानूनों की अतिथा स्वार्य के द्वारा विश्वार कार्य के परमें स्वार्थ है। इसी अविश्व के शिखा कार्य कर परमें स्वार्थ है। इसी अविश्व के शिखा की रहा। करता है। इसी अविश्व के स्वीव्यालक विवाद उत्पन्न होने पर स्वार्थ ने स्वार्थ के स्वीव्यालक करतिश्व स्वार्थ त्यायासम्बद्धा है। इसी कारता है।



2) में शाटमक त्यावस्था का यहाक त प्रकार श्रीविधान के स्थाप होता त्मकत्वावत्था के उद्भक् और माम आधारों है उद्भव है द्वारे का महत्वं काकी है